ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

200वीं सदैव सत्य महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती 1824-2024

वर्ष 46 | अंक 41 | पृष्ठ 08 | दयानन्दाब्द 200 | एक प्रति ₹ 5 | वार्षिक शुल्क ₹250 | सोमवार, 25 सितम्बर, 2023 से रविवार 01 अक्टूबर, 2023 | विक्रमी सम्वत् 2080 | सृष्टि सम्वत् 1960853124 |
दूरभाष/ 23360150 | ई-मेल/ aryasabha@yahoo.com | इन्टरनेट पर पढ़े/ www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200 वीं जयंती के दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान द्वारा दो दिवसीय विशाल आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

जयपुर में आयोजित आर्य महासम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए माननीय आचार्य देवव्रत जी, राज्यपाल गुजरात एवं अन्य महानुभाव तथा उपस्थित आर्य नर-नारी

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में भारत सहित संपूर्ण विश्व में लगातार भव्य आयोजन संपन्न हो रहे हैं। इस वृहद श्रृंखला में आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान द्वारा 23 एवं 24 सितम्बर 2023 को विश्वविद्यालय राजस्थान, जयपुर के प्रांगण में विशाल आर्य महासम्मेलन संपन्न हुआ। दो दिन के इस सम्मेलन में हजारों आर्यजनों ने भाग लिया।

सम्मेलन के प्रथम दिवस प्रांत: 7:00 बजे 200 कुण्डीय यज्ञ एवं 200 बालिकाओं का यज्ञोपवीत पदम्श्री आचार्या सुकामा जी ब्रह्मत्व में हुआ। ओ३म् ध्वजारोहण एम.डी.एच. के चेयरमेन महाशय श्री राजीव गुलाटी जी एवं श्रीमती ज्योति गुलाटी जी के कर कमलों से किया गया। उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि आर्यसमाज के विश्वविश्रुत विद्वान गुजरात राज्य के

- शेष पृष्ठ 4 पर

महर्षि की शिक्षाओं के प्रचार का संकल्प

प्रथम चरण में तीसरा, मथुरा रेलवे स्टेशन पर वैदिक साहित्य के स्टाल का शुभारंभ

21 सितम्बर 2023 को मथुरा जंक्शन रेलवे स्टेशन पर वैदिक साहित्य के स्टाल का उदघाटन करते हुए आचार्य स्वदेश जी, दिल्ली सभा, आर्य केन्द्रीय सभा, वेद प्रचार मंडल, आर्यवीर दल एवं अन्य आर्य समाजों के अधिकारीगण

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा सदैव महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं के साथ आर्य समाज के सिद्धांत, मान्यता और परंपराओं को जन-जन तक पहुंचाने के लिए निरंतर प्रयासरत है। इसके लिए सभा द्वारा चाहे दिल्ली की सेवा बस्तियों में यज्ञ प्रचार के कार्यक्रम हों, वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों का प्रचार-प्रसार हो अथवा मानव सेवा के कार्य लगातार तीव्र गति से चल रहे हैं। वर्तमान में जब महर्षि दयानंद जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस पर 2 वर्षीय आयोजनों की बृहद श्रृंखला चल रही है, भारत के कोने-कोने में और संपूर्ण विश्व में समस्त आर्यजन उत्साह से भरपूर हैं, तब दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्य समाज के इतिहास में पहली बार एक नई पहल करते हुए भारतीय रेलवे स्टेशनों पर वैदिक साहित्य के स्टॉल स्थापित करने का कार्य जोरों पर है। प्रथम चरण में 21 सितंबर 2023 को मथुरा रेलवे स्टेशन पर वैदिक साहित्य के स्टॉल का शुभारंभ हर्षोल्लास पूर्वक किया गया। जिसमें आचार्य स्वदेश जी के सानिध्य में श्री राजेश अग्रवाल, श्री रजनीकांत, श्री अमित अग्रवाल, (श्री सुरेश चंद्र आर्य, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के भ्राता तथा मथुरा निवासी), मथुरा जंक्शन के अधिकारी, श्री संजीव श्रीवास्तव, श्री अमित भटनागर, श्री पिन्कु कुमार

- शेष पृष्ठ 7 पर

महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयन्ती को समर्पित रहा काशी वैश्विक गौरव सम्मान

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी अयक्षता में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ कार्यक्रम

महर्षि दयानन्द और आर्य समाज से प्रभावित थे, अमर शहीद बलिदानी -सुरेश चन्द्र आर्य

जंग-ए-आजादी में कुर्बान 11 शहीदों के वंशजों का किया गया सम्मान महानायकों की गाथा सुनाई गई उनके वंशजों की जुबानी

स्वाधीनता संग्राम में 11 शहीदों के सम्मानित परिवारजनों के साथ सावर्देशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी एवं अन्य महानुभाव

3 सितंबर, 2023 को वाराणसी में 'काशी वैश्विक गौरव सम्मान 2023' का होटल ताज में भव्य आयोजन किया गया यह कार्यक्रम अलगोल फिल्म्स, मुम्बई के तत्वावधान में आयोजित किया गया, जो पूर्ण रूप से महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती को समर्पित था। कार्यक्रम का संयोजन अलगोल फिल्म्स के संचालक श्री अजय जयसवाल जी ने किया और श्री अजय सहगल जी (IDES) सदस्य, हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा इस कार्यक्रम के प्रेरणास्त्रोत रहे।

इस अवसर पर ग्यारह स्वतंत्रता सेनानियों के वंशजों का सम्मान किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली ने की। सम्मानित होने वालों में शहीद भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव, पंडित राम प्रसाद बिसमिल, अश्फाक उल्ला खां, ठाकुर रोशन सिंह, मंगल पांडेय, ऊधम सिंह, रानी लक्ष्मी बाई, वीरांगना दुर्गा भाभी तथा लोकमान्य तिलक के परिजन सम्मिलित थे। कार्यक्रम के आरंभ में श्री अजय सहगल, हिमाचल ने ऋषि दयानंद जी के महान व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए ऋषि महिमा और देश भक्ति की भावना से भरपूर कविताओं से समा बांध दिया और कार्यक्रम के लक्ष्य के बारे विस्तार से बताया। स्वतंत्रता सेनानियों के वंशजों ने स्वामी दयानंद सरस्वती जी को श्रद्धा सुमन भेट करते हुए अपनी अपनी बात कही। शहीद भगत सिंह के भतीजे सरदार किरजीत सिंह ने कहा कि उनके दादा सरदार अर्जुन सिंह जी को ऋषि दयानंद जी ने दीक्षा देकर आर्य समाजी बनाया था और यह स्वामी जी

- शेष पृष्ठ 6 पर

वेदवाणी-संस्कृत

प्राण की महामहिमा

वेद-स्वाध्याय

यथा प्राण बलिहृतस्तुभ्यं सर्वाः प्रजा इमाः।
एवा तस्मै बलिं हरान् यस्त्वा शृण्वत् सुश्रवः॥
-अथर्व० 11 । 4 । 19
ऋषिः-भार्गवो वैदर्भिः॥ देवता-प्राणः॥ छन्दः-अनुष्टुप्॥

शब्दार्थ- प्राण=हे प्राण! **यथा**=जैसे **इमाः**=ये **सर्वाः**=सब **प्रजाः**=प्रजाएँ, जीव **तुभ्यम्**=तेरे लिए **बलिहृतः**=बलि का, कर का, भेंट का आहरण करने वाली हैं **एवा**=इसी तरह **अस्मै**=उस पुरुष के लिए भी ये सब प्रजाएँ **बलिम्**=बलि, भेंट को **हरान्**=लाती हैं, लाने लगती हैं **यः**=जो प्राणोपासक पुरुष **सुश्रवः**=हे सुन्दर सुनाने वाले, हे सुन्दर यश वाले! **त्वाम्**=तुझे **शृणवत्**=सुनता है।

विनय- हे महासम्राट् प्राण! यह देखो कि संसार-भर के सब प्राणी, सब प्रजाएँ, सब जीव तुम्हारे लिए कर ला रहे हैं, तुम्हें प्रतिदिन अन्नरूपी कर की भेंट चढ़ा रहे हैं। यदि वे ऐसा न करें तो वे जीवित ही न रह सकें। तुम ऐसे प्रतापी सम्राट् हो कि डर के मारे, अपने मर जाने के डर के मारे, संसार-भर के सब जीव नित्य तुम्हारी प्राणाग्नि में अन्नबलि दे सकने के लिए अन्नों को जहाँ-तहाँ से ला रहे हैं, बड़े यत्न से पसीना बहाकर अन्न-धान जमा कर रहे हैं और किसी-न-किसी तरह तुम्हें सन्तृप्त कर रहे हैं। इस तरह हे प्राण! तुम जीवमात्र के सदा प्रथम उपास्य बने हुए हो। हे सुश्रवः, हे सुन्दर सुनाने वाले, हे सुन्दर यश वाले! तुम्हारा वह भक्त भी इसी प्रकार सब लोगों का उपास्य और सबकी बलियों का भाजन बन जाता है जो तुम्हारा पूर्ण उपासक हो जाता है, जो तुम्हारे सुन्दर यश को सुनता है, तुम्हारी आज्ञाओं व बातों को सुनता है और ठीक उनके अनुसार आचरण करता है। जो मनुष्य प्राण की उपासना करते हैं, प्राण की महामहिमा का श्रवण-मनन करते हैं, उनके कानों में तुम न केवल सदा अपना दिव्य गान सुनाने लगते हो, किन्तु उन्हें कब क्या करना चाहिए ऐसा अपना दिव्य सन्देश भी हर समय देने लगते हो। धन्य हैं वे पुरुष जिन्हें इस प्रकार प्राण के श्रोता बनने का महासौभाग्य प्राप्त होता है। ऐसे लोग, हे प्राण! मनुष्य समाज के प्राण बन जाते हैं। हम संसार में देखते हैं कि मनुष्य समाज के प्राणभूत ऐसे महापुरुषों के लिए सब लोग अपना अहोभाग्य समझते हुए नानाविध भेंट लाते हैं, उनके सामने अपना घर, धन, सम्पत्ति, पुत्र, जीवन तक उपस्थित कर देते हैं, उन्हें जीवित रखने की सब-के-सब लोग चिन्ता करते हैं और अपने-आप मरकर भी उन्हें जीवित रखना चाहते हैं। हे प्राण! जब तुम्हारे श्रोता की ही इतनी महिमा है तो स्वयं तुम्हारी अपनी महिमा को हम तुच्छ लोग क्या बखान कर सकते हैं?

-:साभार:- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

संपादकीय

पांच मूर्तिमान देवताओं की सेवा और करें सम्मान
श्राद्ध की अंध परंपरा पर लगाएं विराम

“महर्षि दयानंद ने जिन पांच मूर्तिमान देवताओं का वर्णन किया वह जीवित रहते हुए ही मानव और मानव समाज को पोषित, पल्लवित और पुष्पित करते हैं और उनका यह संदेश इसलिए भी अनुकरणीय है कि इन पांचो देवों के बिना किसी का जीवन भी संस्कारित, सुविकसित और सफल नहीं हो सकता। इसलिए महर्षि का यह सार्वजनिक और सर्वमान्य परंपरा का है, जिसको अपनाने से व्यक्ति, परिवार, समाज, देश और दुनिया में सुख, शांति और आनंद की अभिवृद्धि संभव होगी। आज जो संयुक्त परिवार प्रणाली टूटती और बिखरती जा रही है, परिणाम स्वरूप चारों तरफ आपाधापी, अशांति, दुख, पीड़ा और संताप, कष्ट और क्लेश दिखाई दे रहे हैं, उनसे समाधान प्राप्त करने का भी यही सटीक विधि और विधान है, परिवार को एक सूत्र में बांधने का महर्षि का यह प्रेरक संदेश है....”

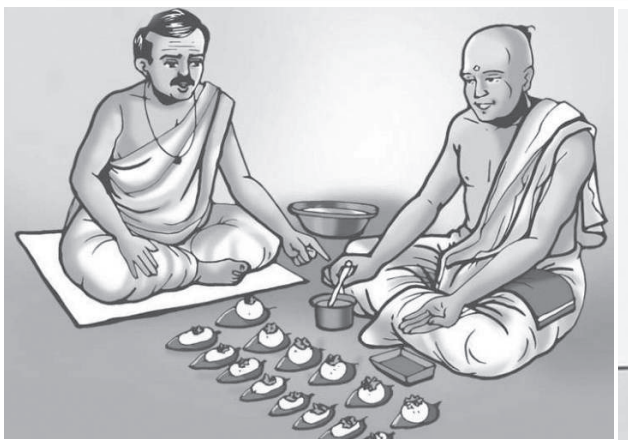

वैदिक धर्म, संस्कृति उतनी ही प्राचीन है जितना कि मानव जीवन। हमारे यहां संयुक्त परिवार प्रणाली में माता-पिता और आचार्य से लेकर वरिष्ठ और विशिष्ट नागरिकों की सेवा तथा सम्मान करना एक आदर्श परंपरा के रूप में सदा से विद्यमान रही है। माता-पिता की आज्ञा पालन और सेवा तथा सम्मान को महत्व देने वाले हमारे महापुरुषों में जहां मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम हुए, वहीं भीष्म पितामह, भक्त पुंडरीक, नचिकेता और श्रवण कुमार जैसी अनुकरणीय महान विभूति वैदिक संस्कारों को निरंतर पोषित करती रहीं। किंतु बहते काल प्रवाह के साथ युग बदले, समय बदला और धीरे-धीरे हमारी संस्कृति भी बदलती गई, हमारे यहां पितृयज्ञ की जो परंपरा थी अर्थात जीवित माता-पिता की सेवा करने का जो आदर्श था वह भी पश्चिमी हवा के वेग से प्रभावित होकर बदलता गया, आज संपूर्ण देश और दुनिया में अगर आज भी सबसे ज्यादा उपेक्षित कोई है तो वह बुजुर्ग माता-पिता ही दिखाई देते हैं। माता पिता और आचार्य के तिरस्कार और अपमान से आहत होकर 19वीं सदी के अद्वितीय महापुरुष, आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने सुखी परिवार की आदर्श परंपरा और व्यवस्था का उपदेश देते हुए यह स्पष्ट संदेश दिया था कि प्रथम पूजनीया मातृमती देवता माता है, संतानों को चाहिए की माता की सेवा सुश्रुषा तन-मन-धन से करें। उसे सब प्रकार प्रसन्न रखें और उसका अपमान कदापि न करें। दूसरा देव पिता है। उसका भी पूजन माता के समान होना चाहिए। तीसरा देव विद्या का दाता आचार्य है। तन-मन-धन से उसकी सेवा करना शिष्यों का कर्तव्य है। चौथा देव वह अतिथि है जो विद्वान धार्मिक सरल और सबका हितकारी हो, जो सर्वत्र भ्रमण करके सत्योपदेश द्वारा सबको सुख देने का प्रयत्न करें। ऐसे संतों और सज्जनों की सेवा करना पुण्योंपार्जन का साधन है। पांचवा देव पत्नी के लिए पति है और पति के लिए पत्नी भी देवता है। ये पांच मूर्तिमान देवता हैं जिनके कारण मनुष्य का पालन पोषण होता है, उससे उत्तम आचार-विचार की शिक्षा मिलती है। सदुपदेश और विद्या की प्राप्ति होती है। परमात्मा को प्राप्त करने की यही पांच सीढ़ियां हैं।

अतः यहां पर विचारणीय बिंदु यह है की महर्षि ने जिन पांच मूर्तिमान देवताओं का वर्णन किया वह जीवित रहते हुए ही मानव और मानव समाज को पोषित, पल्लवित और पुष्पित करते हैं और उनका यह संदेश इसलिए भी अनुकरणीय है कि इन पांचो देवों के बिना किसी का जीवन भी संस्कारित, सुविकसित और सफल नहीं हो सकता। इसलिए महर्षि का यह सार्वजनिक और सर्वमान्य परंपरा का संदेश, उपदेश और आदेश है, जिसको अपनाने से व्यक्ति, परिवार, समाज, देश और दुनिया में सुख, शांति और आनंद की अभिवृद्धि संभव होगी। आज जो संयुक्त परिवार प्रणाली टूटती और बिखरती जा रही है, परिणाम स्वरूप चारों तरफ आपाधापी, अशांति, दुख, पीड़ा और संताप, कष्ट और क्लेश दिखाई दे रहे हैं, उससे निजात पाने का भी यही सटीक विधि और विधान है, परिवार को एक सूत्र में बांधने का महर्षि का यह प्रेरक संदेश है, महर्षि की इस आज्ञा को अपनाने से ही समाज का भला हो सकता है। लेकिन आजकल जीवित माता-पिता बड़े बुजुर्ग और रिश्ते-नाते तो लगातार टूट कर बिखरते जा रहे हैं लेकिन अंध परंपरा और ढोंग, पाखंड तथा अंधविश्वास के कारण समाज में मृतकों का श्राद्ध मनाने की गलत परंपरा आगे बढ़ रही है। जो लोग जीवित माता-पिता को अपमानित और तिरस्कृत करते हैं, जीवित रहते उन्हें भोजन, दवाई और समस्त साधनों के लिए तड़पाते हैं, दुखी करते हैं और खून के आंसू रुलाते हैं, वही लोग उनके मरने के बाद वर्ष में एक बार 15 दिन तक श्राद्ध मानने का ढोंग करते हैं और वह भी केवल एक दिन उनके नाम पर ब्राह्मण को भोजन कराना, वस्त्र आदि दान करना। वे नादान लोग ऐसा भी इसलिए करते हैं क्योंकि उनको डराया और बहकाया जाता है कि अगर आपने अपने पितरों को श्राद्ध और तर्पण से संतुष्ट नहीं किया तो वे तुम्हारा अनिष्ट कर देंगे। अगर यह डर उन तथाकथित श्राद्ध करने वाले श्रद्धालु लोगों को न हो तो संभवतः वे लोग शायद इस अंध परंपरा में भी ना पड़े। यहां पर यह भी सोचने की बात है जीवित माता-पिता का निरादर करने वाले अगर यह समझते हैं कि मृतकों

- शेष पृष्ठ 7 पर

साप्ताहिक स्वाध्याय

पंडित इंद्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित जीवनी महर्षि दयानंद से क्रमशः साभार

विद्या के स्रोत में स्नान

क्रिया-प्रतिक्रिया का सिद्धान्त संसार में सभी जगह पाया जाता है। पानी एक ओर को बह रहा है। सामने पहाड़ की भारी चट्टान आ जाती है। पानी उल्टे पांव भागता है। उसके उल्टे भागने का वेग आगे बढ़ने के वेग के अनुपात से होगा। यदि पानी धीमी गति से आगे बढ़ रहा था तो धीमी चाल से ही पीछे को लौटेगा, परन्तु यदि जल का प्रवाह वेगवान् हो तो उल्टी ठोकर भी जोर की लगेगी। दण्डी जी के विचार प्रवाह में भी जोर की ठोकर लगी। वह कौमुदी, मनोरमा और शेखर के प्रवाह में बड़े वेग से बहे जा रहे थे। अष्टाध्यायी का मूल सूत्र क्रम सुनकर और उसका सरल सौन्दर्य देखकर प्रज्ञाचक्षु की आंखें खुल गईं।

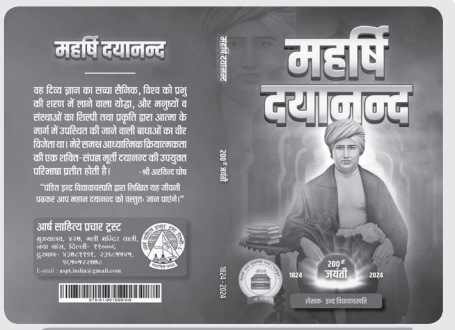

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती पर प्रकाशित

प्रकाशक- आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, सहप्रकाशक- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, पुस्तक प्राप्ति के लिए vedicprakashan.com ऑनलाइन प्राप्त करें अथवा 9540040339 पर संपर्क करें।

क्रमशः गतांक से आगे

कुछ समय रजवाड़ों में बिताकर स्वामी विरजानन्द जी ने मथुरा में अपना आसन जमाया। व्याकरण पढ़ने की इच्छा रखनेवाले विद्यार्थी दूर देशों से यहां तक कि काशी से भी दण्डी जी के पास आते थे। व्याकरण में दण्डी जी का पाण्डित्य अपूर्व हो गया था। इस समय उनके जीवन में एक विशेष परिवर्तन करनेवाली घटना घटित हुई। पड़ोस में एक दक्षिणी पण्डित रहता था। वह प्रतिदिन मूल अष्टाध्यायी का पाठ किया करता था। दण्डी जी उस समय तक सिद्धान्त कौमुदी, मनोरमा और शेखर को ही व्याकरण का आदि और अन्त समझते थे। मूल अष्टाध्यायी का पाठ सुनकर मानो उनकी आंखें खुल गई। उन्हें प्रतीत हुआ कि व्याकरण का ऋषि निर्णीत क्रम कुछ और ही है। अष्टाध्यायी के सूत्र-क्रम को देखते ही उनके हृदय में धारणा हो गई कि कौमुदीकार का बनाया हुआ क्रम अस्वाभाविक है और अष्टाध्यायी के महत्व को कम करने वाला है। यह धारणा होते ही दण्डी जी ने दीक्षित के ग्रन्थों का और उनके साथ ही अन्य सब अर्वाचीन व्याकरण-ग्रन्थों का त्याग कर दिया। जनश्रुति है कि उनका यमुना में प्रवाह कर दिया। अष्टाध्यायी का क्रम दण्डी जी को इतना पसन्द आया कि उन्होंने अपने शिष्यों के पास जितने अर्वाचीन ग्रन्थ थे, वे सब फिंकवा या जलवा दिये। अष्टाध्यायी और महाभाष्य इन दो को हृदय के आसन पर बिठा लिया।

क्रिया-प्रतिक्रिया का सिद्धान्त संसार में सभी जगह पाया जाता है। पानी एक ओर को बह रहा है। सामने पहाड़ की भारी चट्टान आ जाती है। पानी उल्टे पांव भागता है। उसके उल्टे भागने का वेग आगे बढ़ने के वेग के अनुपात से होगा। यदि पानी धीमी गति से आगे बढ़ रहा था तो धीमी चाल से ही पीछे को लौटेगा, परन्तु यदि जल का प्रवाह वेगवान् हो तो उल्टी ठोकर भी जोर की लगेगी। दण्डी जी के विचार प्रवाह में भी जोर की ठोकर लगी। वह कौमुदी, मनोरमा और शेखर के प्रवाह में बड़े वेग से बहे जा रहे थे। अष्टाध्यायी का मूल सूत्र क्रम सुनकर और उसका सरल सौन्दर्य देखकर प्रज्ञाचक्षु की आंखें खुल गईं। उन्हें भान होने लगा कि ऋषि-कृत व्याकरण का क्रम कौमुदी के गढ़े हुए क्रम से बहुत उत्कृष्ट है। इतना उत्तम होते हुए भी सूत्र क्रम गुम क्यों हो गया? कारण यही प्रतीत होता था कि भट्टोजिदीक्षित ने सिद्धान्त कौमुदी बनाकर सूत्र क्रम को पीछे फेंक दिया। इससे दण्डी जी का सारा असन्तोष भट्टोजिदीक्षित पर केन्द्रित हो गया। अष्टाध्यायी और महाभाष्य से उनका प्रेम ज्यों-ज्यों बढ़ता जाता था, भट्टोजिदीक्षित से त्यों-त्यों उन्हें घृणा होती जाती थी।

-क्रमशः अगले अंक में...

बाल बोध

समय के सदुपयोग से खुलते हैं सफलता के द्वार

बच्चो, आर्य संदेश के इस अंक में हम समय के सदुपयोग पर बात करेंगे। समय बहुत मूल्यवान संपदा है। समय सबके लिए समान है। कुछ विद्यार्थी समय का सदुपयोग करते हैं, कुछ नहीं करते और कुछ दुरुपयोग करते हैं। समय एक गति है, एक बहाव है, जो अनवरत बहता है। इस अमूल्य समय की धारा को पहचानकर कुछ विद्यार्थी सफलता के उच्च शिखर पर पहुंचकर अपना, अपने माता-पिता का और अपने राष्ट्र का नाम ऊंचा करते हैं। दूसरी तरफ कुछ ऐसे भी होते हैं जो समय की कीमत को नहीं पहचानते और असफल होने पर अपने दुर्भाग्य को कोसते ही रह जाते हैं। लेकिन समय फिर लौटकर नहीं आता, इसलिए समय की गति को पहचान कर अपने जीवन को सफल बनाओ।

विद्यार्थी जीवन में खेलने-कूदने का, हास-परिहास का, मनोरंजन और प्रसन्न रहने का पढ़ाई के साथ बहुत गहरा संबंध है। पर समय सारिणी बहुत ज़रूरी है। दुनिया में जिसने भी सफलता का परचम लहराया है, उनकी यह खास बात रही कि उन्होंने अपने समय का सदुपयोग किया। क्योंकि इसी समय के प्रवाह में विद्यार्थी प्रोफेसर, वैज्ञानिक, इंजीनियर, डॉक्टर या वह जो कुछ भी बनना चाहे, बन सकता है। इसके विपरीत वह समय बरबाद करके स्वयं बरबाद भी हो सकता है, उसके लिए पतन के रास्ते भी सदैव खुले रहते हैं। इसलिए अपने अनमोल समय को उत्तम कार्यों के लिए विभाजित करके अपनी प्रतिभा का समुचित विकास करें।

खेल (क्रीड़ा) एक ऐसा विषय है- जिसमें विद्यार्थी का ध्यान एक स्थान पर टिक जाता है। फिर उसे अन्य कुछ याद नहीं रहता, वह पूरी तरह खेल में मग्न हो जाता है। खेलने पर शरीर से पसीना निकलता है, रक्त संचार होता है और शरीर स्वस्थ रहता है। शारीरिक विकास के लिए उपयोगी है। लेकिन इतना ज़्यादा खेलना भी उचित नहीं कि शरीर थक जाए और जब आप स्वाध्याय करने या कोई अन्य कार्य करने लगें तो शरीर में दर्द होने के कारण आपका ध्यान बार-बार खेल पर ही जाए। यूं तो विद्यार्थी को मधुर व्यायाम करना चाहिए। थोड़े उपयोगी योगासन, दौड़, सर्वांग सुन्दर व्यायाम आदि लेकिन समय का ध्यान रखकर ऐसा करना चाहिए। ऐसे नहीं करना चाहिए कि खेलने पर आए तो बस पूरा दिन खेलते ही रहे।

हंसना सकारात्मक प्रक्रिया है। हंसने से मस्तिष्क विकसित होता है। विद्यार्थी को दिन में चार बार नि:संकोच होकर हंसना चाहिए लेकिन यह ध्यान रहे कि तुम्हारे हंसने से किसी को दु:ख न पहुंचे। किसी को चिढ़ाना नहीं, व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग मत करना और अच्छी बातों पर हंसना अच्छी बात होती है। अगर कोई आपका हितैशी आपको डांट दे, तो आप उस समय उसको हंसी में टाल दो, कभी अकेले में उस पर विचार तो कर लेना पर मन में गांठ मत बांधना। अपने स्वभाव को सौम्य, शिष्ट और हंसमुख बनाकर रखना उज्ज्वल भविष्य का संकेत है। हंसने के लिए कुछ अच्छे चुटकुले हो सकते हैं, कोई अंताक्षरी, प्रतियोगिता कर सकते हैं, हंसने के कई और बहाने हो सकते हैं। लेकिन हंसी मज़ाक में इतना मत रम जाना कि दुनिया तुम पर ही हंसने लगे। टी.वी., मोबाईल आदि मनोरंजन के लिए जितना उपयोगी है, उससे कहीं ज़्यादा खतरनाक भी सिद्ध हो सकता है। आजकल कोरोना काल के चलते अब मोबाईल का उपयोग ज्यादा हो गया है, इसके साथ साथ टी. वी. भी देखना भी ज्यादा सुलभ हो गया है। किंतु टी. वी. और मोबाइल का सही उपयोग किया जाए तो अच्छी बात है वरना इनके दुष्प्रभाव से बचना बड़ा कठिन है। ये दोनों उपकरण मनोरंजन के साथ-साथ विद्यार्थी को अनेक तत्वों का बोध भी होता है। सामान्य ज्ञान के लिए भी यह अच्छा साधान है, लेकिन ज़्यादा प्रयोग करने से भी विद्यार्थी की हानि भी होती है। शारीरिक हानि-आंखें कमजोर हो जाती हैं, मानसिक-मन पढ़ाई में नहीं लगता और स्मरण शक्ति कमजोर हो जाती है। कुछ विद्यार्थी लगातार टी. वी. पर नजर गड़ाए रखते हैं, अपना कीमती समय वे नष्ट कर देते हैं।

जो उन्हें याद रखना चाहिए उसे स्मरण नहीं करते, टी. वी. के कार्यक्रम दिमाग में नोट कर लेते हैं। दरअसल एक्टर, डायरेक्टर और प्रोडयूसर से कभी आप मिलेंगे तो ज्ञात होगा कि यह सब ड्रामा मात्र है। एक कहानी के ऊपर एक्टर एक्टिंग करता है, डायलाग बोलता है और उसमें अनेक लोगों का परिश्रम होता है। लेकिन एक्टर फिल्म या नाटक की आत्मा की तरह होता है। कुछ भी हो, सारे कार्य एक्टर को महान दर्शाने के लिए होते हैं। इसलिए अच्छे दृश्यों को देखने का प्रयास करो। टी.वी. देखना अच्छी बात है, लेकिन सीमाएं (मर्यादा) समय का ध्यान रखकर और अच्छे, उपयोगी प्रोग्राम देखें तो विशेष लाभ होता है। टी.वी. से हम शिक्षा ले सकते हैं, पर विद्यार्थी की एक समय सीमा होती है। सीमा में रहकर हर कार्य करना उचित है। कवि ने भी प्रसंग के अनुरुप अच्छा कहा-

अति की भली न बोलना,
अति की भली न चुप।
अति की भली न बरसना,
अति की भली न धूप॥

जैसे ज्यादा बोलना भी अच्छा नहीं होता और अधिक मौन रहना भी अनुचित है। ज़्यादा वृष्टि भी अच्छी नहीं होती और अधिक धूप भी हानिकारक है। इसलिए टी.वी. को जी का जंजाल मत बनाओ। सप्ताह में एक दिन या दिन में कोई समय निश्चित कीजिए। जिससे आपको समय की हानि न हो और उचित लाभ प्राप्त हो सके। जब आप

- शेष पृष्ठ 7 पर

पृष्ठ 1 का शेष

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान द्वारा दो दिवसीय विशाल आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

200 बालक एवं 200 बालिकाओं का हुआ यज्ञोपवीत संस्कार

राष्ट्र अभ्युदय एवं महर्षि का मानवता को देन विषय पर विशेष सम्मेलन

भव्य व्यायाम प्रदर्शन एवं महर्षि के अनुयाईयों के वंशजों का किया सम्मान

विजयी प्रतियोगी युवक को प्रमाणपत्र भेंट करते हुए आर्य नेता, श्री दीनदयाल गुप्त जी, दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, जीववर्धन शास्त्री जी, सभा महामंत्री जी एवं एम.डी.एच. के चेयरमैन महाशय राजीव गुलाटी जी एवं श्रीमती ज्योति गुलाटी जी को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए राजस्थान सभा के प्रधान श्री किशनलाल गहलोत जी एवं अन्य महानुभाव

महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी थे। इस अवसर पर आर्यन ग्रुप के चेयरमेन कैप्टन रूद्रसेन जी, डॉलर ग्रुप के चेयरमेन दीनदयाल गुप्त जी, प्रसिद्ध समाज सेवी एवं उद्योग पति श्री विजय शर्मा जी, राजस्थान के पूर्व लोकायुक्त सज्जन सिंह जी कोठारी, अमेरिका से पधारे डॉ. रमेश गुप्ता जी, सर्वेभवन्तु सुखिनः ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री जितेन्द्र भाटिया जी, सभा प्रधान श्री किशन लाल गहलोत, मन्त्री श्री जीववर्धन शास्त्री, कोषाध्यक्ष जयसिंह गहलोत, हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान, श्री राधाकिशन जी एवं श्री ज्योति गुलाटी मंचासीन अतिथियों में सम्मिलित थे। उदघाटन सत्र की अध्यक्षता एम.डी. एच. के चेयरमेन महाशय श्री राजीव गुलाटी ने की। मंचासीन अतिथियों का स्वागत गुरुकुल माउण्ट आबू के आचार्य ओमप्रकाश, सभा के पूर्व मन्त्री डॉ. सुधीर शर्मा, प्रो. सन्दीपन आर्य, अशोक कुमार शर्मा, जयपुर हेरिटेज नगर निगम की महापौर श्रीमती सौम्या गुर्जर, संजीव प्रकाशन से श्रीमती अंजु मित्तल, एवं आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के अंतरंग सदस्यों द्वारा किया गया। सभा का संचालन सभा मंत्री जीववर्धन शास्त्री ने किया।

सम्मेलन के द्वितीय सत्र में राष्ट्र अभ्युदय एवं युवा सम्मेलन के अन्तर्गत मुख्य प्रवक्ता स्वामी धर्मबन्धु विशिष्ट वक्ता आचार्य आर्य नरेश, आचार्य चन्द्रशेखर शर्मा ग्वालियर, पूर्व विधायक श्री ज्ञानदेव आहुजा थे। सत्र का संचालन प्रो. सन्दीपन आर्य द्वारा किया गया।

महर्षि की मानवता को देन विषयक तृतीय सत्र की अध्यक्षता दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री धर्मपाल आर्य जी ने की। मुख्य अतिथि डॉलर ग्रुप के चेयरमेन श्री दीनदयाल गुप्त जी, विशिष्ट अतिथि श्री विजय शर्मा जी थे। सत्र के मुख्य प्रवक्ता आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक रहे। सत्र में वनवासियों के प्रतिनिधि श्री देवीलाल जी गौण को सम्मानित किया गया। सत्र संयोजन डॉ. मोक्षराज आर्य द्वारा किया गया।

सायंकालीन सत्र में आर्यवीर दल राजस्थान द्वारा व्यायाम प्रदर्शन एवं शक्ति प्रदर्शन किया गया। इस सत्र में प्रान्तीय, संचालक भवदेव शास्त्री, आचार्य नन्दकिशोर, श्री जितेन्द्र भाटिया एवं सत्यवीर आर्य उपस्थित रहे। आर्यवीरों के प्रदर्शन में कन्या गुरुकुल भुसावर, आर्य कन्या गुरुकुल शिवगंज, कन्या गुरुकुल दाधिया, आर्ष गुरुकुल आबु पर्वत, गुरुकुल लाढौत, आर्यवीर दल पाली के कमांडो, आचार्य रामकृष्ण शास्त्री के नेतृत्व में महर्षि दयानन्द योगधाम के ब्रह्मचारियों ने भाग लिया।

रात्री 7 से 8 बजे तक भजनोपदेश हुए। आचार्या श्रुति शास्त्री, प्रियंका शास्त्री, केशवदेव आर्य जी द्वारा मधुर भजनों की प्रस्तुतियां दी गई। 6 वर्षीय लघु बालिका जाहन्वी मितल द्वारा मधुर स्वर में स्वस्तिवाचन के मन्त्रों का गान किया गया। सत्र का संयोजन डॉ. सुधीर कुमार द्वारा किया गया।

देश-देशान्तर में आर्यसमाज नामक सत्र में डॉ. रमेश गुप्ता जी, श्री विनय आर्य जी एवं डॉ. अशोक आर्य जी ने विचार व्यक्त किए। अन्तिम सत्र में सम्मान समारोह में सभा प्रधान श्री किशनलाल गहलोत, कोषाध्यक्ष श्री जयसिंह गहलोत, पुस्तकाध्यक्ष डॉ. मोक्षराज, प्रो. सन्दीपन आर्य, अशोक कुमार, डॉ. सुधीर कुमार शर्मा, नरदेव आर्य, बलवन्त निडर, अशोक आर्य केकड़ी, रवि चडढा एवं सभा व अन्तरंग पदाधिकारी एवं सदस्यों ने भारत के सभी प्रान्तों से पधारे प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के पदाधिकारियों का सम्मान किया गया। असम, हरियाणा, दिल्ली, एवं छतीसगढ की आर्य प्रतिनिधि सभाओं के पदाधिकारियों ने सम्मेलन में भाग लिया। सत्र का संयोजन सभा मन्त्री जीववर्धन शास्त्री ने किया। सम्मेलन के द्वितीय दिवस का प्रारम्भ प्रातःकालीन मंत्रों से हुआ। गुरुकुल आबू पर्वत के आचार्य ओमप्रकाश जी के ब्रह्मत्व में 200 बालकों का यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आचार्य अवनीश मैत्री, डॉ. वरुण शास्त्री, आचार्य प्रशांत एवं गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा मन्त्रपाठ किया गया। प्रथम एवं द्वितीय दिवस की सम्पूर्ण यज्ञ व्यवस्था आचार्य अवनीश मैत्री, सुनील अरोडा, तुंगनाथ त्रिवारी, श्रीमती सुधा मित्तल, सतीश मित्तल द्वारा की गई।

मंथन नामक सत्र में प्रकाश आर्य, प्रो. सुधीर कुमार शर्मा, आचार्य आर्य नरेश, आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा, प्रदीप आर्य अलवर, अशोक आर्य उदयपुर आदि अनेक विद्वानों ने विचार व्यक्त किए। सत्र का संयोजन अशोक कुमार शर्मा ने किया। समस्त कार्यकर्ताओं, दैनिक याज्ञिकों, संन्यासियों, वानप्रस्थियों, आदिवासियों से सम्पन्न मंच पर कार्यक्रम का सत्रावसान हुआ। सभा प्रधान श्री किशनलाल गहलोत द्वारा ध्वजारोहण कर सम्मेलन के समापन की घोषणा की गई।

राजस्थान प्रदेश के महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुयायी राजवंशों के वंशजों का सम्मान करना कार्यक्रम की विशेषता रही। सभी वक्ताओं, विद्वानों, अतिथियों ने महर्षि दयानन्द के विचारों, कार्यो, मन्तव्यों नवजागरण, महिला शिक्षा, दलितोद्धार राजनैतिक, दार्शनिक चिन्तन, स्वातत्रंय संग्राम में अवदान, आर्यसमाज की वर्तमान में प्रासंगिकता आदि अनेक विषयों पर विचार व्यक्त किया। **-मंत्री जीववर्धन शास्त्री**

आर्यवीर दल राजस्थान के आर्यवीरों द्वारा मलखम पर स्तूप बनाते हुए तथा सामूहिक व्यायाम प्रदर्शन का विहंगम दृश्य

आर्य समाज के इतिहास में पहली बार

तीन रेलवे स्टेशनों पर वैदिक साहित्य के स्टाल किए स्थापित

पहले चरण में और सात स्टाल होंगे निर्मित– आर्यजन सहयोग दें

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज का 150वां स्थापना दिवस ये दोनों ऐसे स्वर्णिम अवसर हैं, जब हम आर्यों को महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं और आर्य समाज के सिद्धांतों तथा मान्यताओं को जन-जन तक पहुंचाने के लिए अत्यधिक परिश्रम और पुरुषार्थ करना ही चाहिए। इसी भावना को साकार करते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने 10 भारतीय रेलवे स्टेशनों पर वैदिक साहित्य के स्टाल स्थापित करने का संकल्प लिया है। जिनमें आगरा के दो रेलवे स्टेशनों पर वैदिक साहित्य का प्रचार-प्रसार प्रारंभ हो गया है और मथुरा रेलवे स्टेशन पर भी स्टॉल का कार्य लगभग पूरा हो चुका है। इसके अतिरिक्त अभी सात अन्य रेलवे स्टेशनों पर भी वैदिक

साहित्य के स्टाल निर्मित किए जाएंगे।

अतः सभी आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं, आर्य प्रतिष्ठानों और आर्य परिवारों से निवेदन है की वैदिक साहित्य के प्रचार-प्रसार में दिल खोलकर सहयोग देंवे, महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने में अपनी ओर से तथा अपने परिजनों के नाम से अथवा अपनी संस्था की ओर अवश्य योगदान देकर महर्षि के उदघोष **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** को सफल बनाने हेतु आगे आएं। **-सभा महामंत्री**

वैदिक साहित्य के प्रचार हेतु कृपया अपनी दान राशि सीधे निम्नांकित बैंक खाते में भी जमा करायें-

Delhi Arya Pratinidhi Sabha-Vedic Prakashan
Doner's account A/c No : 910010009140900
IFSC CODE : UTIB0002193 Axis Bank Connaught Place

कृपया दानदाता अपना आनलाइन सहयोग देकर
व्हाटसऐप नं. पर 9540040388 सूचित अवश्य करें।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती कविताओं की रचना करें और पुरस्कार पाएं

हे प्रख्यात योगीराज! विश्वबन्द्य दयानन्द स्वामी– कवि अखिलेश मिश्र

प्रबल प्रताप में पराक्रमी पुरन्दर से,
बाद-सिंधु-मन्थन को मन्दर निहारौं मैं।
दान में दधीचि, बलवान हनुमान जेसे,
ग्यान में बसिष्ठ, ध्यास, जैमिनी बिसारौं मैं।।
'अखिलेस, आसुतोष दीननि, अधीननि को,
कामतरु आरत-अबल को विचारौं मैं।
नामी जोगिराज बिस्वबन्द्य दयानन्द स्वामी,
कौन रूप रावरो मही पै निरधारौं मैं।।

शब्दार्थ– पुरन्दर-इन्द्र। वाद-सिन्धु-शास्त्रार्थे का समुद्र। आसुतोंष-महादेव जी।

भावार्थ– हे प्रख्यात योगिराज ! विश्वबन्द्य दयानन्द स्वामी !! मैं पृथ्वी पर आपका कौनसा रूप निश्चित करूं? क्योंकि आप प्रबल प्रताप में इंद्र से पराक्रमी और शास्त्रार्थ सागर के मथने के लिए मंदराचल पर्वत हैं। आप दान में दधीचि ऋषि और बल में महावीर हनुमान सरीखे हैं। मैं आपके सामने ज्ञान में वशिष्ठ, व्यास और जैमिनि को भूल जाता हूँ। अखिलेश कवि कहते हैं कि आप दीनों और अधीनों के लिए महादेव जी तथा दु:खी और निर्बल के हेतु कल्पवृक्ष ही हैं।

अलंकार– द्वितीय उल्लेख

फिरत चहूँधा इसलाम की दुहाई घोर,
महती इसाई जाति जोर कै उमहती।
धाक जमि जाति दृढ़ बिबिध कुरीतिन की,
हिन्दुन की रीति-नीति भीति सम ढहती।।
'अखिलेस' रहती न वेद की निसानी कहूं'
व्याकुल ह्वै धरनि लवेद-गैल गहती।
ब्रह्मानन्द-कलित-कमण्डल को संग छोंड़ि,
जौ न दयानन्द जू की कृपा-गंग बहती।।

शब्दार्थ–लवेद-वेद विरुद्ध धर्म।

भावार्थ–यदि ब्रह्मानंद रूपी सुन्दर कमंडल का साथ छोड़ करके मुनिवर दयानन्द जी की कृपा गंगा न बहती तो चारों ओर इस्लाम की जबर्दस्त दुहाई फिर जाती और ईसाई जाति बड़े जोरों से हिन्दू धर्म पर आक्रमण करती। नाना प्रकार की कुरीतियों की धाक दृढ़ता से जम जाती। हिन्दुओं की रीति-नीति दीवार की तरह धड़ाम से गिर जाती। अखिलेश कवि कहते हैं कि वेद का कहीं चिह्न भी न रहता तथा पृथ्वी व्याकुल होकर लवेद का मार्ग पकड़ती।

अलंकार–सम्भावना

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के अवसर पर आर्य संदेश के सभी आयु वर्ग के पाठकों से अनुरोध है कि महर्षि दयानंद जी के जीवन पर विभिन्न घटना क्रमों पर आधारित कविता की रचना करके संपादक, आर्य संदेश, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड़, नई दिल्ली 110001, पर भेजें अथवा Email- aryasandeshdelhi@gmail.com करें। आपकी स्तरीय कविता को आर्य संदेश साप्ताहिक में प्रकाशित किया जाएगा और विशेष अवसर पर आपको पुरुस्कृत भी किया जाएगा।

आर्य रत्न ठाकुर विक्रम सिंह जी का जन्मदिवस भव्य समारोह पूर्वक संपन्न

आर्य नेता, विद्वान, विदुषी, संन्यासी एवं विभिन्न संस्थाओं के अधिकरियों ने प्रदान की शुभकामनाएं

ठा. विक्रम सिंह जी के जन्मदिवस पर विश्व व्यापी आर्य समाज की ओर से शुभकामनाएं देते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य एवं जेबीएम ग्रुप के चेयरमैन तथा दयानन्द सेवाश्रम संघ के प्रधान श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य और उपस्थित आर्यजन

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के महान शिष्य, आर्य समाज के सेवा कार्यों के पोषक, परोपकार और दानशील स्वभाव के धनी वैदिक विद्वान ठा. विक्रम सिंह के जीवन के 80 वसंत पूर्ण होने पर 19 सितंबर 2023 को उनका जन्मदिवस तालकटोरा स्टेडियम के प्रांगण में भव्य समारोह पूर्वक संपन्न हुआ। इस अवसर पर आयुष्काम यज्ञ डा. प्रियंवदा वेद भारती द्वारा संपन्न कराया गया। यज्ञ के उपरांत आर्ष गुरुकुल होशंगाबाद के आचार्य श्रद्धेय स्वामी ऋतस्पति जी ने आशीर्वचनों से ठा. विक्रम सिंह के लिए दीर्घ जीवन, स्वस्थ जीवन एवं संस्कारित जीवन के लिए कामना की। अभिनंदन समारोह को संबोधित करते हुए योग गुरू बाबा रामदेव जी ने उनके दीर्घायुष्य की कामना की और वैदिक सनातन संस्कृति के केंद्र आर्ष गुरुकुलों की उन्नति के लिए ठा. विक्रम सिंह द्वारा दी जाने वाली आर्थिक सहायता की प्रशंसा करते हुए इसे वैदिक सनातन संस्कृति की रक्षा में एक सराहनीय कदम बताया। स्वामी जी ने कहा कि उनका स्पष्ट मत है यदि गुरुकुलों की रक्षा होगी तभी सनातन संस्कृति भी बच पाएगी। इसलिए उन्होंने सभी उद्योगपतियों का आह्वान किया कि ठा. विक्रम सिंह की तरह वे भी गुरुकुलों की रक्षा के लिए आगे आएं। उन्हें आवश्यक आर्थिक सहयोग देकर गुरुकुलीय परंपरा को सुदृढ़ बनाने में अपना-अपना योगदान अवश्य देंवे। समारोह के संरक्षक स्वामी आर्यवेश जी ने ठाकुर विक्रम सिंह को महर्षि दयानंद का सच्चा अनुयायी बताते हुए कहा कि उन्होंने व उनके पारिवारिक सदस्यों ने अपना तन-मन-धन अर्थात् अपना सर्वस्व वैदिक सनातन संस्कृति के संरक्षण के लिए समर्पित किया हुआ है।

इस अवसर पर एक अभिनंदन ग्रंथ का विमोचन किया गया, जिसमें उनके द्वारा राष्ट्र एवं समाज हित में की गई सेवाओं को देखते हुए ठा. विक्रम सिंह को "आर्य राष्ट्र के पुरोधा" के रूप में उनके व्यक्तित्व को रेखांकित किया गया है। इस अभिनंदन ग्रंथ के विमोचन के अवसर पर सुरेश चंद्र आर्य, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली, प्रसिद्ध उद्योगपति सुरेंद्र कुमार आर्य, एमडीएच के अध्यक्ष राजीव गुलाटी, एसके शर्मा डायरेक्टर, डीएवी मेनेजिंग कमेटी, प्रो. विट्ठल राव, मंत्री, सार्वदेशिक सभा, हीरो ग्रुप के अध्यक्ष योगेश मुंजाल, परोपकारिणी सभा के अध्यक्ष सत्यानंद आर्य, राष्ट्रीय कवि सारस्वत मोहन मनीषी, धर्मपाल आर्य, प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, विनय आर्य, महामंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, कन्हैया लाल आर्य, संरक्षक हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा, डा. राकेश कुमार आर्य, देवमुनि जी वानप्रस्थ, आचार्या सुमेधा, गुरुकुल चोटीपुरा, श्री सुरेन्द्र रैली, प्रधान एवं महामंत्री श्री सतीश चडडा, आर्य केन्द्रीय सभा, कोटा संभाग के प्रधान श्री अर्जुनदेव चडडा, श्री जोगेन्द्र खट्टर, महामंत्री दयानन्द सेवाश्रम संघ जैसे अनेक प्रसिद्ध आर्य नेता, संन्यासीगण व विद्वान उपस्थित रहे तथा सभी ने अपनी शुभकामनाएं ठा. विक्रम सिंह के दीर्घ-जीवन के लिए व्यक्त की।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केन्द्रीय सभा, अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ की ओर से ठा. विक्रम सिंह जी को स्मृति चिन्ह भेंट कर शुभकामनाएं देते हुए दांए से सर्वश्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी, जोगेन्द्र खट्टर जी, सुरेन्द्र रैली जी, विनय आर्य जी, अरुण प्रकाश वर्मा जी, सतीश चडडा जी, एस. के. शर्मा जी, बृहस्पति आर्य जी एवं अन्य महानुभाव

अपनी शुभकामना व्यक्त करते हुए इस अवसर पर सुदर्शन न्यूज के अध्यक्ष सुरेश चव्हाण ने परमात्मा से प्रार्थना की कि ठा. विक्रम सिंह के शताब्दी वर्ष का अभिनंदन समारोह भारत मंडपम् में मनाने का अवसर प्राप्त हो। साथ ही उन्होंने कहा कि आर्य समाज के विद्वानों में ही ऐसी क्षमता है कि वे सनातन विरोधियों को तार्किक रूप से परास्त कर सकते हैं। यह कार्यक्रम वेद निधि स्थापना समारोह के रूप में मनाया गया था, जिसके अंतर्गत वैदिक विद्वान ठा. विक्रम सिंह का सम्मान समारोह आयोजित किया गया।

इस कार्यक्रम के मुख्य संयोजक डा. आनंद कुमार, पूर्व वरिष्ठ पुलिस अधिकारी, संयोजक प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डा. धर्मेन्द्र शास्त्री व डा. ज्वलंत कुमार शास्त्री रहे। इसके अतिरिक्त देवेश प्रकाश, सहसंयोजक, मनोज गुलाटी, दानवीर विद्यालंकार, चंद्रमौली शर्मा, डा. गजराज सिंह, बृहस्पति आर्य, लाल सिंह कुशवाहा, प्रशांत कुमार, आचार्य दुष्यंत, जयवीर योगाचार्य आदि ने इस कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रमुख भूमिका निभाई।

Khandav Forest

Continuing the last issue

Alexander invaded India after Buddha. Alexander's stay in India was for a very short time. His influence is not visible, yet we can see a shadow of his example in two major events. Efforts of Chandragupta Maurya's empire were influenced by Alexander's example and it is no wonder if Ashoka's endeavor to establish a religious empire was also influenced by Alexander's universal conquest. As Chandragupta's Indian empire was the answer to the desired Indian empire of Greece, similarly Ashoka's religious invasion was a response to the invasion of Greek civilization and culture.

We see the same condition in the Gupta period. The political empire of the Gupta emperors was a kind of fortress to protect the country from the attacks of the Huns and the Scythians. Political organizations often arise due to injuries coming from outside. The Gupta Empire was the result of the conquests of the northern tribes. At the same time, the organization of the old Brahmin-religion in the form of Puranic religion, on the one hand, was an external sign indicating the internal condition of the Aryan race, while at the same time, it was not inferior to the influence of the barbaric invaders from the north. In the organization of Puranic religion, both the inner movement and the outer action are clearly visible.

Much later, in the beginning of the 11th century, the second invasion of Muslims on India begins. There was no political attack of Islam on India then. That invasion was primarily a religious one; political victory was only a side effect of it. The sword of Islam had come to convert India into a Muslim country. When he came, he found the victim weak. The fragmented India came under political subjugation with little effort. The real purpose of the sword was to conquer India religiously. It can be said with certainty that Islam did not achieve much success in this objective. The reason is that where India could not stand its united political power against the political power of Muslims even after being dependent for many centuries, it had changed its religious organization from the very beginning and made it stand for self-defense.

The ups and downs that we find in the religion of India during the long Muslim period are of two kinds. To prevent another external invasion, the trenches themselves have been there, on the other hand efforts are being made in many places to include Islam and Hinduism in a universal principle. In both of these we see the effect of outside. Sati-practice, Purdah, restrictions on food and drink, strict divisions of caste, untouchability were these fences to protect Indian religion from Islam. For centuries, Indian religion has been trying to stop the influence of Islam and there is no doubt that the failure of Islam in religious point of view has never been felt in India.

But the dams which were being built to stop the progress of Islam, did not prove to be beneficial in any way. They stopped the entry of pure air, did not leave any scope for progress and development and surrounded the strong current of religion and made it a house of moss, mosquitoes and mud. To stop the attack of the enemy, the residents of the city dug a ditch all around, create a high wall - coming and going stops. The enemy cannot come in, but the residents of the city cannot go out either. Progress stops, food and drink reduces - epidemics occur. If a city wants to protect itself and does not want to die from an epidemic, then there is only one way for it to come out of the fort and attack the enemy and kill him. Unfortunately, there was no life in Hinduism at that time. Hindus were engaged in self-defense, they did not think of making an attack on Islam. The result was that there was an epidemic in the house. In the middle of the 19th century, we find the real religion of India chained, walled and held down by beams.

In the last part of the Muslim period, due to the influence of Akbar's liberal religious policy, some efforts were also made their was to remove the difference between Hindu and Muslim by promoting the universal form of religion. Bhagat Kabir was the main person among those who made such efforts. Kabir's disciple describes his principle in the following words-

Move with everyone, meet everyone, call every one by name.

Yes, yes, everyone should do it, and settle down in ones village.

It will be known from the words of Bhagat Kabir how he wanted to dissolve the differences in the broad form of religion.

Kabir's disciple Bulla Sahib wrote this poem in his swing-

Where there is no beginning, no end, no middle,

where there is al-Niranjan, the fair.

To be continued in next issue

आर्य सन्देश के आजीवन सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त आजीवन सदस्यों की सूचनार्थ निवेदन है कि आर्यसन्देश का आजीवन शुल्क 10 वर्ष के लिए होता है, किन्तु सभा की ओर से अभी किसी भी सदस्य की सदस्यता को निरस्त नहीं किया गया है। आर्यसन्देश साप्ताहिक आपका अपना पत्र है, जिसके सफल एवं निरन्तर प्रकाशन में आपका सहयोग सादर अपेक्षित है। अत: ऐसे समस्त सदस्यों, जिन्होंने 2009 से पूर्व आजीवन सदस्यता ग्रहण की हो वे अपना आगामी 10 वर्षीय शुल्क 1500/- रुपये भेजकर तत्काल अपनी आजीवन सदस्यता का नवीनीकरण 2029 तक करवा लेवें, जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें। - ***सम्पादक***

पृष्ठ 3 का शेष

समय का सदुपयोग करेंगे, तब आपको स्वयं प्रसन्नता होगी। प्रसन्नता परमात्मा का प्रसाद है। विद्यार्थी को अपने जीवन में प्रसन्नता अपनानी चाहिए। चेहरे पर ताजगी हो, मुख पर मुस्कान हो और हिम्मत के भाव हों, कुछ कर दिखाने की चाहत उसके अन्दर से झलकनी चाहिए। समय कैसा भी हो विपरीत हो या अनुकूल हो, हौंसले के साथ आगे बढ़ना चाहिए।

निराशा को कभी अपने पास मत आने देना, मूड खराब मत करना और निरन्तर परिश्रम और पुरुषार्थ के बल पर उन्नति के मार्ग पर अवरोधों को पार करते हुए आगे बढ़ते रहना ही सफलता की निशानी है। अगर विद्यार्थी किसी कारण से अथवा अपने आलस्य, प्रमाद से, समय के दुरुपयोग से असफल हो भी जाता है तो उसे निराश नहीं होना चाहिए। ये विषाद की स्थिति नहीं होती बल्कि जागने का संकेत होता है। समय की कीमत को पहचानने का सुनहरा अवसर होता है।

पृष्ठ 1 का शेष

की ही प्रेरणा थी कि उनके परिवार की तीन पीढ़ियों ने देश की आजादी की लड़ाई में अपना योगदान दिया। शहीद अश्फाक उल्ला खाँ के पोते श्री अश्फाक ने पंडित राम प्रसाद बिसमिल और अश्फाक उल्ला खाँ की मित्रता के मार्मिक किस्से सुनाते हुए उन दोनों के आर्य समाज शाहजहाँपुर में निवास की विस्तार से चर्चा की। अमर शहीद सुखदेव के पोते श्री अनुज थापर ने गर्व से कहा कि उनका परिवार आर्यसमाजी रहा है और उन्होंने भारत माँ की जय के जयघोष लगवाए और पूरा वातावरण देशभक्ति के रंग में रंग गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी ने इस कार्यक्रम के आयोजक श्री अजय जायसवाल जी और प्रेरणास्त्रोत श्री अजय सहगल जी, हिमाचल को बधाई दी! उन्होंने कहा कि आजादी के लिये कुर्बानी देने वाले असली चेहरों को इतिहास में भुला दिया गया देश की युवा पीढ़ी का ऐसे शहीदों की जानकारी देने के लिये आज का यह कार्यक्रम अत्यन्त प्रेरणादायक और महत्वपूर्ण है।

इस अवसर पर सरदार किरणजीत सिंह जी द्वारा सरदार अजीत सिंह के सबंध में लिखित ऐतिहासिक लेख को समेटे पुस्तिका धरोहर का भी विमोचन किया गया। इस पुस्तक का संकलन श्री अजय सहगल जी (हिमाचल) द्व ारा किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित सांसद श्री मनोज तिवारी ने देशभक्ति भरे गीत सुनाकर सबको भाव विभोर कर दिया। उत्तर प्रदेश सरकार में मंत्री श्री रवींद्र जायसवाल, आर्य संन्यासी स्वामी शिवानन्द जी, पीरामल ग्रुप से सरदार हरिंदर सिक्का जी भी इस कार्यक्रम में उपस्थित रहे और सभी ने अपने अपने विचार भी प्रस्तुत किये। उपहार स्वरूप हर सम्मानित परिवार को सत्यार्थ प्रकाश की एक एक प्रति भी भेंट की गई।

हवन सामग्री

मात्र 90/- किलो

प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें -

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली, मो. 9540040339

पृष्ठ 2 का शेष

के नाम पर श्राद्ध करने से पितरों के ऋण से उऋण हो जाएंगे तो उनका यह विचार बिल्कुल गलत है। इसलिए मरने के बाद चाहे कोई श्राद्ध करें या न करें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। लेकिन यहां पर महर्षि का संदेश है की जीवित माता-पिता, आचार्य, अतिथि और समस्त रिश्ते-नातों का सम्मान करना, उनकी सेवा, सुश्रूसा करना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य बताया है।

श्राद्ध की परंपरा पर अगर विचार किया जाए तो समझ आता है कि हम सब जीवात्माएं भी तो पूर्व जन्मों में अपने गुण कर्म स्वभाव के अनुसार कहीं न कहीं किसी न किसी योनि में रहे होंगे, अगर कोई मनुष्य रहा होगा तो उसका भी उसके परिजन श्राद्ध मानते होंगे लेकिन क्या कभी किसी के पास इन श्राद्ध के दिनों में कोई लंच बॉक्स आया है क्या? अगर नहीं, तो फिर जिन मृतकों के प्रति यह विचार करके ब्राह्मण को भोजन कराया जाता है, दान-दक्षिणा दी जाती है कि उनके पितरों के पास पहुंच जाएगी, तो यह कैसे संभव होगा? इस पर गहराई से विचार अवश्य करें। और यह भी जरूर सोचें कि अगर कोई वर्ष में एक दिन भोजन करा भी दे, तो 364 या 365 दिन तक क्या कोई किसी के पितर भूखे रहेंगे? जब हम इस तरह चिंतन मनन करेंगे तब पता चलेगा कि यह श्राद्ध परंपरा अमानवीय और निरर्थक है।

अत: हम सबको महर्षि दयानंद सरस्वती जी के उपदेश को स्वीकार करते हुए यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हम अपने जीवित माता-पिता, आचार्य और बड़े बुजुर्गों का सम्मान करें, उनके द्वारा निर्देशित पांच मूर्तिमान देवताओं की भावनाओं को समझें, परस्पर आदर करें, सेवा करें और उन्हें संतुष्ट रखें, तभी हम अपने परिवार, समाज, देश और दुनिया में सुख शांति और समृद्धि के साथ जीवित रहेंगे।

आधुनिक परिवेश में जो दिखाई दे रहा है वह बड़ा ही दुखदायक और कष्टकारी है। आज विदेशों की तर्ज पर भारत में भी वृद्धाश्रमों की भरमार होती जा रही है, वृद्धजन या तो अपने ही घरों में बेगानों की तरह जीने को मजबूर हैं, अगर दो बेटे हैं तो दोनों अलग-अलग रहने के लिए विवश हैं, इससे भी आगे एक महीने एक बेटे के घर और दूसरे महीने दूसरे बेटे के साथ रहकर जीवन बिता रहे हैं अथवा किसी का एक बेटा है तो वे वृद्धाश्रमों में रहने को मजबूर हैं। यह सब देख कर तो यही लगता है कि 'जीवित माता-पिता के साथ तो दंगम दंगा, और मरने के बाद पहुंचावे गंगा' यह संस्कृति हमारी नहीं है, हमें तो अपने राम, कृष्ण, भीष्म पितामह आदि प्रेरणा लेकर यह व्रत लेना चाहिए कि जब तक माता-पिता जीवित रहें तब तक हम उन्हें अपमानित और तिरस्कृत ना करें, बल्कि उनकी सेवा और सम्मान करने के अवसर को अपना सौभाग्य समझें, उनकी भावनाओं का भी ध्यान रखें, अगर उन्हें किसी चीज की आवश्यकता है तो अपनी सामर्थ्य से उनको संतुष्ट रखें, अगर उनको कहीं घूमने के लिए जाना है तो उन्हें भ्रमण कराएं और अगर उन्हें कुछ विशेष खाने का मन करता है तो उनकी मनपसंद का उन्हें खाना खिलाएं, उन्हें अकेले में रहने के लिए मजबूर न करें, उनको वृद्धाश्रम में न जाना पड़े, तांगे में जुतने वाला घोड़े की तरह उनसे व्यवहार न करें कि जब तक घोड़ा तांगा खींचता है, तब तक उसको अच्छा खाना जैसे चने और आहार खिलाया जाता है, लेकिन जैसे ही उसकी ताकत खत्म होती है तो फिर उसे उसके हाल पर छोड़ दिया जाता है। इसको लेकर युवा पीढ़ी अपने उस समय को याद करे कि जब माता-पिता के कंधों पर बैठकर हम मेला देखते थे और बड़ा अच्छा लगता था। वे हमें खिलाते पिलाते थे, अपना पेट काटकर भी हमारा पेट पालते थे, आज अगर वह बुजुर्ग हैं तो हम यह भी ध्यान रखें कि उन्होंने हमें जन्म दिया, पढ़ाया लिखाया, लायक बनाया, अपने पैरों पर खड़ा किया। अब हमारी भी जिम्मेदारी है कि हम उनका पूरा ख्याल रखें, वह हमें जेब खर्ची भी देते थे और खाना खिलाने के लिए कहां-कहां लेकर के जाते थे। तो हमें भी अपने कर्तव्य और दायित्व को निभाना चाहिए, तभी हमारा कल्याण होगा। इस श्राद्ध वाली परंपरा को छोड़कर जीवित माता-पिताओं का सम्मान करें, सेवा करें और महर्षि दयानंद के सिद्धांतों और आर्य समाज की मान्यताओं को अपनाकर अपना जीवन सफल बनाएं।

-संपादक

मैं आर्य समाजी कैसे बना?

इस स्तम्भ में उन महानुभावों का परिचय प्रकाशित किया जा रहा है जो किसी की प्रेरणा/ विचारधारा से आर्य समाजी बनें हों। यदि आपके साथ भी कुछ ऐसा हुआ है तो आप भी अपना प्रेरक प्रसंग अपने फोटो के साथ लिखें अपने आर्यसमाजी बनने की कहानी और भेज दें aryasabha@yahoo.com पर ईमेलं। आप हमें अपनी कहानी और फोटो डाक द्वारा भी भेज सकते हैं। हमारा पता है- **सम्पादक, आर्य सन्देश साप्ताहिक, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001**

गुरु विरजानन्द गुरूकुल, करतारपुर जिला जालन्धर, पंजाब का वार्षिकोत्सव

-: कार्यक्रम :-

दिनांक- 2 से 8 से 2023 तक इस अवसर पर ऋग्वेद यज्ञ, वैदिक प्रतियोगिताएं, योग शिविर, गुरु विरजानन्द सम्मेलन, सद्भावना सम्मेलन, देशभक्ति भजन संध्या आदि मुख्य कार्यक्रम रहेंगे।

आप सभी में सादर आमन्त्रित हैं। सम्पर्क सूत्र 9803043271

महर्षि दयानन्द उवाच परोपकारी एवं प्रेरक शिक्षाएं

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की प्रमुख रचना सत्यार्थ प्रकाश से लेकर उनकी जीवनी, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, संस्कारविधि, व्यवहारभानु, आर्योद्देश्य रत्नमाला, सवमंतव्यामंतव्य प्रकाश, उपदेश मंजरी आदि अनेक ग्रंथों से चयनित परोपकारी और प्रेरक शिक्षाएं आर्य संदेश के नियत नियमित कॉलम में महर्षि दयानंद उवाच के नाम से प्रकाशित की जा रही हैं। सभी पाठकों से अनुरोध है कि महर्षि दयानंद सरस्वती की इन जनकल्याण कारी शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने के लिए सभी आप इनका सोशल मीडिया पर प्रचार-प्रसार करें और महर्षि के ऋण से उऋण होने का प्रयास करें...

आचार्य संतुष्ट हो:- विद्यार्थी लोग भी जिन कर्मों से आचार्य की प्रसन्नता होती जाये वैसे कर्म करें। **(व्यवहारभानु पृ. 12)**

आत्महत्या:- आत्मघात करने में पाप ही होता है। पापाचरण के फल भोगे बिना कोई मनुष्य पापों से नहीं बच सकता।

(श्रीमद्दयानन्द प्रकाश पृ. 429)

आत्मा अमर है:- आत्मा सत्य है। उसकी सत्ता को न कोई शस्त्र छेदन कर सकता है और न अग्नि जला सकती है। वह एक अजर-अमर और अविनाशी पदार्थ है। शरीर तो अवश्यमेव नाशवान है जिसका जी चाहे इसका नाश कर दे। परन्तु हम देह की रक्षा के लिए सनातन धर्म को नहीं त्यागेंगे सत्य को नहीं छोड़ेंगे।

(श्रीमद्दयानन्द प्रकाश पृ. 409)

आत्मा देह सम्बन्ध:- ''वत्स! इस नाशवान क्षणभंगुर शरीर को कितने दिन स्वस्थ रहना है। बेटा अपने कर्तव्य कर्म को पालन करते आनन्द से रहना। घबराना नहीं। संसार में संयोग और वियोग का होना स्वाभाविक है।'' **(श्रीमद्दयानन्द प्रकाश पृ. 573)**

आत्मा के अनुकूल ही बोलें:- देखो! थोड़े से जीवन में ध र्मात्मा अर्थात् सत्यवादी, सत्यमानी, सत्यकारी मनुष्य धर्मार्थ काम मोक्ष फलों को प्राप्त होता और मिथ्यावादी, मिथ्यामानी, अनृतकारी सर्वदा दु:ख को प्राप्त होता है। इसलिए किसी को आत्मा और परमेश्वर के मिथ्या भाषणादि से शत्रु न बनाना चाहिये। जैसा कुछ तुम्हारे आत्मा में हो वैसा ही जीभ से बोलो। **(ऋ. द. प. वि. भाग 2 पृ. 626)**

पृष्ठ 1 का शेष

गौतम तथा श्री राधारमन मिश्रा, श्री ओम प्रकाश गोयल, वैदिक प्रवक्ता, श्री अरुण प्रकाश वर्मा, उपप्रधान, श्री सुरेश चंद्र गुप्ता, मंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य सतीश चड्ढा, महामंत्री, डॉ. मुकेश कुमार आर्य, मंत्री, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य, श्री अजय तनेजा, श्री राकेश चड्ढा, कोटा, श्री बृहस्पति आर्य, श्रीमती सुषमा, वेद मन्दिर, मथुरा के ब्रह्मचारियों, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के संवर्धक सर्वश्री धर्मवीर आर्य, करण आर्य तथा आशीष आर्य, श्री दिनेश आर्य, मन्त्री, श्री विशाल आर्य, शिक्षक, आर्यवीर दल की उपस्थिति में यह आयोजन सम्पन्न हुआ, सभी का धन्यवाद।

-आर्य सतीश चड्ढा
महामंत्री, आर्य केंद्रीय सभा

शोक समाचार

श्री राम किंकर जी का निधन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री राम किंकर जी का लगभग 80 वर्ष की अवस्था में 22 सितम्बर 2023 को अकस्मात निधन हो गया। उन्होंने 37 वर्षों तक सभा में निष्ठा पूर्वक सेवा कार्य किया और इससे पूर्व 11 वर्षों तक पंजाब सभा में सेवारत रहे। उनका अंतिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी श्रद्धांजलि सभा 04 अक्टूबर 2023 को उनके निवास पर संपन्न होगी।

श्रीमती सुदेश कालरा जी का निधन

आर्य स्त्री समाज पश्चिम विहार की मंत्राणी श्रीमती सुदेश कालरा जी का 24 सितम्बर 2023 को अकस्मात निधन हो गया। उनका अंतिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी श्रद्धांजलि सभा 27 सितम्बर 2023 को आर्य समाज पश्चिम विहार में संपन्न हुई। जिसमें सभा की ओर से तथा क्षेत्रीय आर्यजनों द्वारा श्रद्धांजलि दी गई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त व परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -संपादक

सोमवार 25 सितम्बर, 2023 से रविवार 01 अक्टूबर, 2023
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि. नं0 डी. एल. (एन. डी.)- 11/6071/2021-22-2023
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 27-28-29 सितम्बर, 2023 (बुध-वीर-शुक्रवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-2023
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 29 सितम्बर, 2023

ओ३म्

आर्य समाजों की विभिन्न गतिविधियों से सम्बन्धित रजिस्टर उपलब्ध हैं

- आर्य समाज सदस्यता रजिस्टर
- आर्य समाज सदस्यता शुल्क (चन्दा) रजिस्टर
- भवन आरक्षण रजिस्टर
- आर्य वीर दल रजिस्टर
- आर्य वीरांगना दल रजिस्टर
- संस्कार (पुरोहित रजिस्टर)
- आर्य युवा महिला मिलन सदस्यता रजिस्टर
- आर्य बाल वाटिका रजिस्टर
- आर्य कुमार सभा रजिस्टर
- रसीद बुक रजिस्टर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
सम्पर्क सूत्र : 9540040339

प्रतिष्ठा में,

JioTV Jio TV+
आर्य समाज का एक मात्र टीवी चैनल
आर्य सन्देश टीवी
Arya Sandesh TV
अब जियो टीवी नेटवर्क पर भी
Jio Set Top Box और JIO मोबाइल App पर उपलब्ध

ओ३म्

भारत में फेले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए
उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ — सत्यार्थ प्रकाश — सत्य के प्रचारार्थ

प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23x36%16	मुद्रित मूल्य ₹60	प्रचारार्थ ₹40
विशेष संस्करण (सजिल्द) 23x36%16	₹100	₹60
पॉकेट संस्करण	₹80	₹50
विशिष्ट पॉकेट संस्करण	₹150	₹100
स्थूलाक्षर (सजिल्द) 20x30%8	₹200	₹120
उपहार संस्करण	₹1100	₹750
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी अजिल्द	₹200	₹130
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी सजिल्द	₹250	₹170

प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

JBM Group
Our milestones are touchstones

ENHANCING TECHNOLOGY
EMPOWERING PEOPLE
ENABLING INNOVATION

JBM Group stands committed towards creating value for all our stakeholders and consistently building sustainable business models via innovation and customer orientation programs, thereby creating stronger synergies for all our businesses.

Technology has been the bed rock and a key catalyst for our growth. Our persistence towards achieving excellence has transformed us and we have amalgamated our strengths and R&D acumen to make our products & services future-ready, through the power of People, Innovation and Technology.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व संपादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्पेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, फोनः 23360150, 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com, Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
● संपादकः धर्मपाल आर्य ● सह संपादकः विनय आर्य ● व्यवस्थापकः शिवकुमार मदान ● सह व्यवस्थापकः आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह